

Living the

LOTUS

Buddhism in Everyday Life

11
2017

VOL. 146

Founder's Essay

जीवन के उपहार के लिए आभार

बौद्धधर्म की देशना का मूलभूत सिद्धान्त प्रतीत्यसमुत्पाद है- प्रत्येक चीज का अस्तित्व अन्य सभी के साथ सबन्ध के आधार से है। मुझे विश्वास है कि रिश्शो कोसेइ-काइ के सभी सदस्य इससे अच्छी तरह अवगत हैं। प्रश्न यह है कि वास्तव में इस सिद्धान्त को कैसे प्रयोग में लाया जाये।

सर्वप्रथम, आप स्वयं से पूछें कि कौन है जो यह संभव करता है कि आपका दिन सफलतापूर्वक बीते ? सिर्फ कितने लोगों से आप सहायता और समर्थन प्राप्त करते हैं? इन संबंधों को समझना कृतज्ञता व्यक्त करने के अभ्यास के लिए प्रारम्भिक बिंदु है।

जब कार्यालय में सभी काम अच्छी तरह से चल रहे होते हैं, तो हम अभिमान से यह मान लेते हैं कि यह पूरी तरह से हमारी अपनी क्षमताओं और प्रयासों का परिणाम है, और आभारी होना भूल जाते हैं। इसलिए कितने लोगों के समर्थन से हमारा दिन संभव हो सका है, इसका आंकलन करने की दैनिक आदत डालना महत्वपूर्ण है।

सुबह और शाम को सूत्रों का पाठ करना हमारी एक ऐसी प्रथा है जिसके द्वारा हम उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

जो अपने चारों ओर के लोगों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना कभी भी नहीं भूलते उनके जीवन और जब चीजें अच्छी तरह से चलने पर दम्भ से अपना पीठ थपथपाने वाले या जब प्रयास सफल नहीं हो रहा हो तो दुर्भावना रखने वाले के जीवन के बीच जमीन आसमान का अन्तर है।

सूत्र के पाठ के माध्यम से अपने पूर्वजों को पुण्य का स्थानांतरण करना, अपने माता-पिता का सम्मान करना और उनकी देख-भाल करना, और बोधिसत्वचर्या विकसित करना उन सभी लोगों से मिली दया का प्रतिदान है जिन्होंने अपनी सहायता बनाये रखते हुए हमें जीवन का उपहार दिया है।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co.), P. 266-267

Living the Lotus
Vol. 146 (November 2017)

Senior Editor: Shoko Mizutani
Editor: Eriko Kanao
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा और
बोधिसत्वचर्या का अभ्यास

निचिको निवानो, प्रेसिडेण्ट,
रिश्शो कोसेइ काइ



पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा के लिए कभी भी बहुत देर नहीं होता

अपने माता-पिता का सम्मान करना और उनकी देखभाल करना पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा को दर्शाता है। जैसाकि कहावत में है, “जब आप पुत्रसुलभ धर्मों का पालन करने जैसा अनुभव करने लगते है, आपके माता-पिता संसार में नहीं हो सकते हैं।” सामान्य विचार है कि हमें उनके जीवित रहते ही उनका ध्यान रखना चाहिए।

हालांकि, हम में से बहुतों को अपने माता-पिता की देखभाल करना बहुत कठिन लगता है जबतक वे स्वस्थ हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम अपने पुत्रसुलभ धर्मों के निर्वहन में अजीब सा या शर्मिंदगी अनुभव करते हैं, या क्योंकि कहीं पर, हमारे दिमाग में, आशाओं पर आधारित कामना रहती है कि हमारे माता-पिता हमेशा स्वस्थ रहेंगे। परिणामस्वरूप, कई लोगों को अनुभव होने लगता है कि माता-पिता के मरने के बाद उनके प्रति आभार का कितना बड़ा ऋण उनके ऊपर है और उनके जिंदा रहते हुए, उनके प्रति पुत्रसुलभ धर्मों का निर्वाह नहीं करने के लिए अफसोस करते हैं।

हालांकि, मेरा मानना है कि अपने माता-पिता के प्रति पुत्रसुलभ धर्मों का निर्वाह करने में कभी भी बहुत देर नहीं होती है।

जैसाकि पूर्व में मैंने इस पत्रिका में लिखा है, “हम अपने जीवन में इस तरह से आगे बढ़ें, जिससे कि हम अपने माता-पिता और पूर्वजों के मन को शांति दे सकें।” (“Filial Respect and the Buddha Way,” July 2011)। इसका चित्रदर्शी वर्णन करने के लिए, हमें अपने जीवन के हर तत्व पर बहुत ध्यान देना चाहिए। प्रत्येक दिन उत्साहपूर्वक और खुशी से बिताना चाहिए। हमें ईमानदारी से ऐसा काम करना चाहिए जो अन्य लोगों को खुशियाँ दे सके। यदि पुत्रियाँ और पुत्रगण ऐसे जीवनपथ पर चल रहे हैं, तो उनके माता-पिता को, दिवंगत होने के बाद भी, मन की शांति मिलेगी। इसलिए, पुत्रसुलभ धर्मों का पालन करने में कभी भी देर नहीं होती है, और कहने की आवश्यकता नहीं है कि माता-पिता, जो अभी भी सक्रिय और अच्छे हैं, उनके लिए यह जानने से बड़ी कोई खुशी नहीं है कि उनके बच्चे ईमानदारी से जी रहे हैं और उन चीजों को कर रहे हैं जो उनके आसपास के लोगों को खुशियाँ प्रदान करती है।

बेशक, अपने पूर्वजों की कब्रों और अपने परिवार की बौद्ध वेदी के समक्ष प्रार्थना करना, अपने आप में, पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा का एक कार्य है। यह मात्र इसलिए नहीं है कि आप अपने माता-पिता या अपने पूर्वजों के आगे अपने हाथ



जोड़ रहे हैं, बल्कि, क्योंकि ये कार्य स्वयं ही प्रमाण हैं कि आप एक भद्र पुरुष के रूप में विकसित हो रहे हैं जो अपने जीवनस्रोत के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सकता है।

पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा सौ कार्यों का स्रोत है

हमारे दैनिक जीवन के संदर्भ में पुण्डरीक सूत्र में धर्मदेशना की व्याख्या के मर्म को समझाते हुए संस्थापक निक्क्यो निवानो ने हमें तीन चीजों का महत्त्व बताया है- पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा, पूर्वजों का सम्मान एवं बोधिसत्त्वचर्या का अभ्यास। पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा की इस व्याख्या के अनुसार, क्योंकि यह हमारे पूर्वजों को सीधे सम्मान देने से जुड़ा हुआ है, हम इन दोनों को एक साथ जोड़ सकते हैं और यह भी कह सकते हैं कि पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा और बोधिसत्त्वचर्या का अभ्यास रिस्सो कोसेइ-काई की सम्पूर्ण शिक्षा है।

फिर, क्या बोधिसत्त्वचर्या का अभ्यास है ? यह बुद्ध की शिक्षा का पालन करना है, जैसेकि दान करना, शीलों का पालन करना और सहनशील बनना; दूसरे लोगों का सम्मान करना; और ऐसे कार्य करना जो आपके आस-पास के लोगों को खुशी देता है। बदले परिप्रेक्ष्य में, जो लोग दूसरों की खुशी से खुश होते हैं उन्हें बोधिसत्त्व कहते हैं, और इस अतमोल जीवन को पाने के लिए आभार प्रकट करना बोधिसत्त्व के हृदय एवं मन को बल प्रदान करने वाला स्तंभ है।

इसके सन्दर्भ में, हम किस अर्थ में पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा को लें, इसके लिए पुनः विवेचना करें। यदि हम पुत्रसुलभ धर्म के स्पष्ट चित्र को देखते हैं, जो अपने दैनिक जीवन को ध्यानपूर्वक जीना है और ऐसी जीवन शैली का नेतृत्व करना है और जो बोधिसत्त्वचर्या के अभ्यास के माध्य से दूसरों को सच्ची खुशी देता है, हम समझते हैं कि पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा, पूर्वजों का सम्मान और बोधिसत्त्वचर्या का अभ्यास मूल रूप से एक ही है। और इन तीनों में जो समान अभिधायक है वह जो जीवन हम जी रहे हैं उसके लिए आभार प्रकट करना है।

एक चीनी कहावत के अनुसार, “पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा सौ कर्मों का स्रोत है।” इसका अर्थ है कि पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा सभी अच्छे कर्मों की नींव है। जन्मदाता माता-पिता के प्रति आभार प्रकट करना पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा की नींव है और इसलिए, जीवन के लिए आभार ही सभी अच्छे कर्मों का मंच है। दरअसल, यह कहावत हमें सिखाता है कि जीवन के लिए आभार में अच्छे संसार की रचना की शक्ति है।

रिश्शो कोसेइ-काइ में हमारी प्रथा है कि हम एक दिसंबर से वर्ष का प्रारंभ करते हैं, और इसलिए हम इस वर्ष का प्रारंभ करने जा रहे हैं जो संस्थान की स्थापना की अस्सीवीं वर्षगांठ को चिन्हित करेगा। इस महीने, मैंने “पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा और बोधिसत्त्वचर्या के अभ्यास” के विषय में बात की है, जिसका हमारे संगठन में महत्वपूर्ण स्थान है। मुझे आशा है कि उनके माध्यम से, आप अपने जीवन के प्रारंभिक बिन्दुओं का पुनः मूल्यांकन कर सकते हैं और स्वयं के श्रद्धा विश्वास की स्थिति पर पुनः एक बार दृष्टि डाल सकते हैं। इसे मस्तिष्क में रखकर, मुझे आशा है कि आप बुद्ध धर्म को जितना संभव हो उतना लोगों के साथ साझा करने के बारे में गहराई से सोचेंगे, जो बोधिसत्त्वचर्या के अभ्यास का आधार है, और जिसके चलते, अन्य लोगों के साथ, जीने के आनंद का भी अनुभव करेंगे।

From Kosei, November 2017



मैं चाहती हूँ कि मेरी पुत्री चीजों को फेंकना छोड़ दे



मुझे अपनी 19 महीने की पुत्री के साथ परेशानी हो रही है, वह कुछ भी फेंकना पसंद करती है, जो उसके हाथ आ जाता है और जिसमें उसके खिलौने भी हैं। जब वह वैसा करती है, मैं हर बार उसे डाँटती हूँ, लेकिन, मैं सोचती हूँ कि क्या उस पर इतना ज्यादा चिल्लाना अच्छा तरीका है। दूसरी ओर, मुझे डर है कि अगर मैं उसे बार बार नहीं डाँटती हूँ, तो उसका व्यवहार अधिक उग्र होगा। इस सम्बन्ध में मेरी समझ अच्छी नहीं है कि मुझे उसे कितनी बार डाँटनी चाहिए।



नन्हे बच्चे करीब 19 महीने के होते होते अपने हाथों पैरों को सहज ही चलाने लगते हैं और वे काफी सक्रिय हो जाते हैं। उनकी चीजों को फेंकने की जो आदत है, उसमें हिंसा की भावना नहीं होती है। उन्हें यह जानकर आनन्द मिलता है कि वे अपने शरीर को स्वेच्छा से घुमा फिरा सकते हैं। उनमें ऐसी चेतना नहीं होती है कि कैसे शक्ति को नियंत्रित करना है जब वे सामान फेंकते हैं।

जब आपकी पुत्री कुछ फेंकती है, तो उसके लिए चिल्लाकर डाँटना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि धीरे-धीरे प्यार से अनुशासित करते हुए मातृसुलभ चिंताओं से उसे यह कहना चाहिए कि “यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है, इसलिए इसका पूरा ध्यान रखो और प्यार से व्यवहार करो!” इस अवधि में, बच्चे सुखद और अप्रिय भावनाओं के बीच के अंतर से अच्छे और बुरे को समझने लगते हैं। वे आगे बढ़ते हैं और जो सुखद है उसे करते हैं, और अप्रिय लगने वाली चीजों से दूर हटते हैं, (इसे सुख का सिद्धान्त कहते हैं)।

जब आपकी पुत्री कुछ गलत करती है, तो आपको उसे बताना चाहिए, “मैं इतनी दुःखी हूँ कि तुमने ऐसा किया,” और अपने चेहरे पर एक सच्चा उदास भाव दिखलायें। या, अत्यंत कठोर नज़र से आप उससे कह सकती हैं, “यह सख्त मना है!” उसे मारने या चुटकी काटने के बजाय, यह बेहतर होगा कि उस व्यवहार को रोकने के संकेत के रूप में उसके हाथों को हल्के से थपथपायें।

इसके विपरीत, जब आपकी पुत्री चीजों को ठीक से संभाल कर

रखती है, तो आपको अपने चेहरे पर मुस्कराहट के साथ प्रसन्नता दिखानी चाहिए और कहना चाहिए कि “तुम कितनी अच्छी हो! मैं तुम से बहुत खुश हूँ और मुझे तुम पर गर्व है। मैं सच्चे मन से कह रही हूँ!” जो बात महत्वपूर्ण है वह है कि, उसे अनुशासित करने के उद्देश्य से ऐसे शब्दों का प्रयोग करने के बजाय, आप पूरे मन से माँ की भावनाओं को व्यक्त करके उसे अहसास कराएँ कि आप जो कुछ कह रही हैं सच्चे मन से कह रही हैं, और इसे बार बार प्यार से ओतप्रोत अभिव्यक्तियों एवं शब्दों में दोहराएँ। नन्हें बच्चे के लालन पालन की आरंभिक अवस्था का प्रमुख बिन्दु यह है कि आप वास्तव में मन में जो भी अनुभव करती हैं, उसे बार बार बतायें।

इसके अतिरिक्त, अगर आपके पास कुछ है जो आप उसे स्पर्श करने देना नहीं चाहती हैं, तो क्यों नहीं उसे उस जगह में रखने की कोशिश करें जो उसकी पहुँच से बाहर है।



(टोक्यो अनुसंधान संस्थान के परिवार शिक्षा द्वारा प्रदान उत्तर)

The Tokyo Research Institute for Family Education इस आधार पर काम करता है कि “यदि माता पिता बदल सकते हैं तो बच्चों में भी परिवर्तन आयेगा।” हम विभिन्न स्थानों में प्रेजेंटेशन देते हैं और संबन्धित माता पिता को अपनी सलाह देते हैं। “Family education from their children” कार्यक्रम में हमारी मदद से अनेक हँसते खेलते परिवार निकल आये।

स्नेहिल मुठभेड़ों को संचित करना

आप एक ऐसी श्रेष्ठ माँ हैं जो पूरे मन से अपनी बेटी के करीब रहने की कोशिश करती हैं और हर रोज उसके साथ प्रेम से बातचीत करती हैं, जिससे कि उसका आध्यात्मिक विकास हो।

उन्नीस महीने की उम्र के आसपास के नन्हें बच्चे एक शब्द का उच्चारण भी ठीक ठीक नहीं कर सकते हैं, न ही आसानी से समझ सकते हैं जो माँ वास्तव में उनसे कहना चाहती है। उन दिनों के दौरान, "Childcare Lifeline" के उत्तर में वर्णित अंश के अनुसार, एक ही उपाय है कि आप अपनी पुत्री को मातृसुलभ भावनाओं से बार-बार अवगत कराएँ; ऐसा करना 'खुशी के सिद्धान्त' के आधार पर है। फिर, उस समय, वास्तव में जो महत्व रखता है वह है - आपको अपनी पुत्री के साथ प्रेम से मिलने-जुलने का प्रयास करना चाहिए और मजबूत संबंध विकसित करना चाहिए।

बुद्ध की मूलभूत देशना उत्पत्ति - वय (engi) का सिद्धान्त है, जिसे एक मुठभेड़ के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। संस्थापक निक्क्यो निवानो का अपनी पुस्तक Jinsei kokoro gake (बौद्ध धर्म के अनुसार रोजमर्रा की जिंदगी, कोसेइ प्रकाशन) में ऐसा निर्देश है कि इस सिद्धान्त के अनुसार ही सभी चीजों का उदय हुआ है और अन्य सभी के कारण ही उनका क्षय होता है। इस संदर्भ में इसे 'मुठभेड़' के रूप में ले सकते हैं।

हमारे परिवर्तनशील जीवन का हर पल परिवर्तन की श्रृंखला की अटूट कड़ियाँ हैं। "जब परिस्थितियों (en) से मुठभेड़ अनुकूल होता है, परिवर्तन भी अनुकूल होता है और जब यह मुठभेड़ प्रतिकूल होता है, परिवर्तन भी प्रतिकूल होता है। परिवर्तन उत्पत्ति- वय के सिद्धान्त से नियंत्रित होता है," (बौद्ध धर्म के अनुसार रोजमर्रा की जिंदगी, पृ.36-37)।

जब भी आपकी पुत्री कुछ फेंकती है, आपको ऐसा दोहराते हुए पूरे मन से उसके साथ बात करना चाहिए, "यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है, इसलिए इसकी देखभाल करो, और प्यार के साथ प्रयोग में लाओ!" और उसके साथ हुए स्नेहिल मुठभेड़ों को संयोगने का प्रयास करें। माँ का हर्षित चेहरा पुत्री के लिए उसके आध्यात्मिक विकास के पोषण का स्वरूप है। जब वह उचित ढंग से चीजों का रख-रखाव कर सकती है, आप उसे अपनी सच्ची खुशी से क्यों नहीं अवगत करा सकती हैं ?

(धर्म शिक्षा और मानव संसाधन विकास विभाग द्वारा पर्यवेक्षण)



Please give us your comments!



We welcome comments on our e-newsletter Living the Lotus.

E-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

पुत्रसुलभ धर्मनिष्ठा का पालन

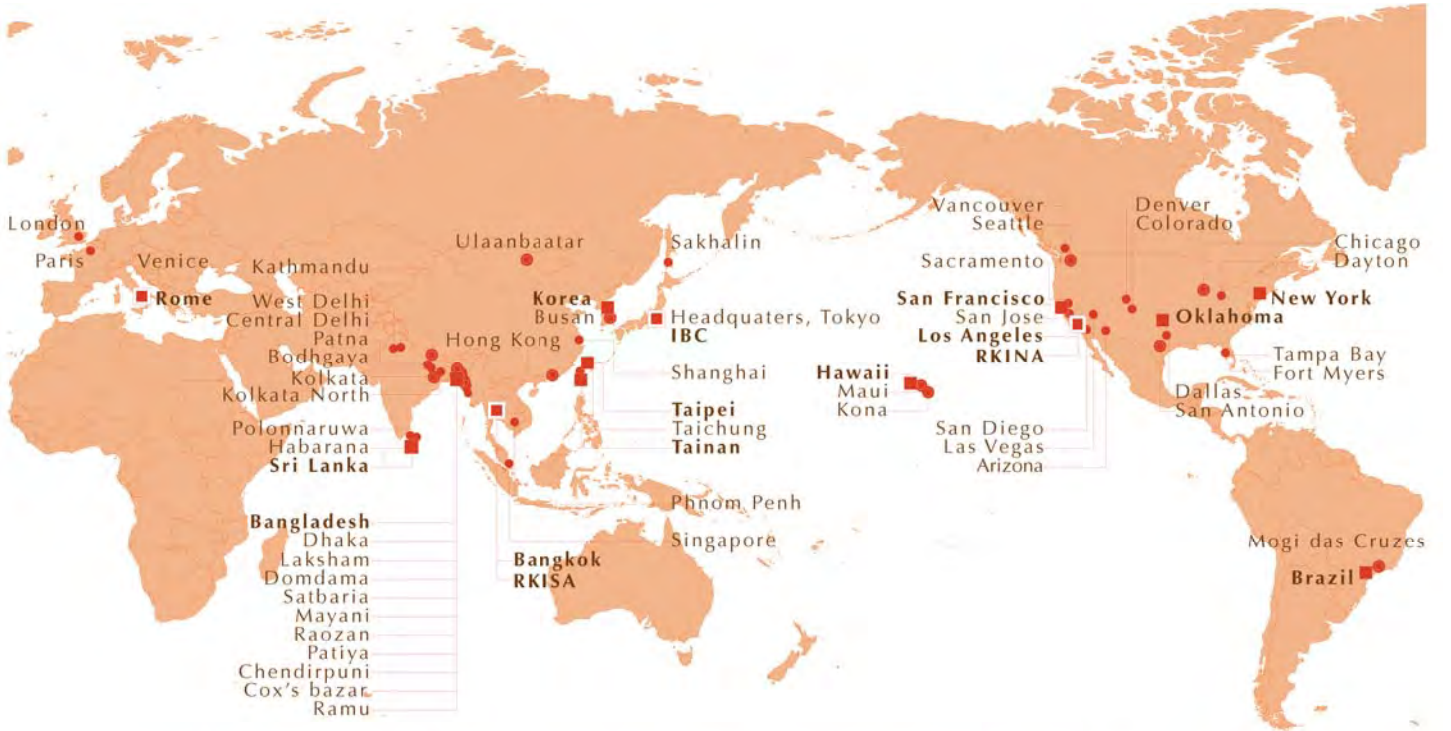
“माता-पिता के मरणोपरान्त ही पुत्रसुलभ धर्म प्रारंभ होता है। इसमें पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा के माध्यम से बोधिसत्वचर्या का अभ्यास करना और एक ऐसा व्यक्ति बनना है जो दूसरों को खुश कर सकता है।”

1 नवंबर को, संघ के सभी विदेशी सदस्यों की ओर से, कोरिया के रिश्शो कोसेइ-काइ के एक चैप्टर की प्रमुख श्रीमती सोंग ने टोकियो में मुख्यालय के महान पवित्र हॉल में अपनी आध्यात्मिक यात्रा के वृत्तांत की साझेदारी की। जब वह केवल एक वर्ष की थीं, उन्होंने अपने पिता को खो दिया। उनकी माँ परिवार के भरण पोषण के लिए एक बड़े शहर में काम करने के लिए चली गयीं और उन्हें दादा दादी के साथ छोड़ दिया गया। उन्होंने अपनी माँ के साथ अपनी किशोरावस्था में फिर से रहना शुरू किया, लेकिन उनमें हमेशा अपनी माँ के प्रति विद्रोह का भाव था। सत्ताईस वर्ष की आयु में उन्होंने शादी कर ली और 1995 में रिश्शो कोसेइ-काई में उन्हें प्रवेश करा दिया गया। उनकी सास, जिनकी श्रीमती सोंग ने सेवा की थी, का निधन दो वर्ष पूर्व ही हो गया था, और इसके चार महीने बाद, उनकी माँ की अचानक मृत्यु हो गयी। श्रीमती सोंग को गहरा सदमा लगा और वह स्वयं को दोषी मानने लगीं, यह वास्तव में उसी वक्त हुआ, जब उन्हें बोध हुआ कि अंततः उनके लिए उनकी मां से मिली दया का भुगतान करने का समय आ गया है, जिन्होंने अपना पूरा जीवन अपने बच्चों को समर्पित कर दिया था। यह वह समय था जब उन्हें प्रेसिडेंट निवानो के ऊपर उद्धृत शब्दों से राहत मिली।

“यद्यपि मुझे मानव रूप में बहुमूल्य जीवन का वरदान मिला है, मैं अपने सम्पूर्ण जीवन का सर्वनाश कर सकती थी यदि मेरा रिश्शो कोसेइ-काइ से सामना नहीं होता। इसने मुझे ‘दूसरों को आगे रखने’ के अभ्यास के माध्यम से स्वयं को उत्तम करने के प्रयास में मुझे एक अद्भुत जीवन जीने में समर्थ किया है।” श्रीमती सोंग ने खुशी खुशी अपना वृत्तांत साझा किया। मैं विश्वास करता हूँ कि उनके दिवंगत माता पिता के मन को परम शांति मिली होगी और उन्हें अपनी बेटी पर बहुत गर्व भी हुआ होगा। मुझे आशा है कि मैं भी एक ऐसा जीवन जी सकूंगा जो मेरे दिवंगत मातापिता को परम शांति देगा।

शोको मिजुतानी

रिश्शो कोसेइ काइ अन्तरराष्ट्रीय विभाग निर्देशक



Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers

2017

Rissho Kosei-kai International

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A.
Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way,
WA 98003 U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, USA
Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927 e-mail: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,
HI 96740 U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
Tel: 1-773-842-5654 e-mail: murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446/55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongjheng District,
Taipei City 100 Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701 Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Taichung

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai of Paris

International Buddhist Congregation (IBC)

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibe-rk.org/>

Rissho Kosei-kai of South Asia Division

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Central Delhi

224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi

66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka, New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center

Rissho Kosei-kai of Singapore

Thai Rissho Friendship Foundation

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax:* 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai